दिनांक - 27-04-2020

कॉलेज का नाम - मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम - डॉ॰ फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक - प्रथम खंड कला

विषय - प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई - चतुर्थ

पत्र - एक

अध्याय - ऋग्वैदिक काल स्त्रोत

यद्यपि विवाह में पिता की अनुमति या सहमति आवश्यक थी तथापि स्त्रियों को स्वंय विवाह संबंधी अधिकार भी प्राप्त था। ऋग्वेद में समनो (उत्सवों) का उल्लेख है जिनमें कन्याएँ स्वंय अपनी पति का वरन कर लेती थी कभी-कभी शारीरिक बीमारी के कारण विवाह से बिलंब भी हो जाता था। ऐसी कन्या के विवाह में दहेज भी दिया जाता था अपने अग्रज से पूर्व विवाह करने वाले अनुज को परिवित्त कहा जाता था।

ऋग्वेद के विवाह सूक्त में विवाह संस्कार का विस्तृत

विवरण मिलता है । विवाह के समय तक प्रायः वर-वधू एक दूसरे से अपरिचित होते थे। विवाह के अवसर पर वधू एक विशेष प्रकार के वस्त्र को धारण करती थी। जिसे वाधूय कहा जाता था।

विवाह का मुख्य उद्देश्य संतान- विशेष रूप से पुत्र की प्राप्ति था। ऋग्वेद में संतान हीनता को बुरा माना गया है छांदोग्य उपनिषद में परिवार में महत्व की दृष्टि से क्रमशः पिता, माता, भाई, बहन को गिनाया गया है । ।

ऋग्वेद के विवाह सूक्त से विवाह संस्कार का विस्तृत विवरण मिलता है। विवाह के अवसर पर वधू विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करती थी जिसे वाधूय कहा जाता था

भोजन एवं वस्त्र :-

आर्य मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। इनमें अन्न, दूध, घी तथा मांस शामिल थे।

Scanned with CamScanner

भोजन में एक स्थान पर दूध में पकी हुई खीर को क्षीर पकोदनम कहा गया है। जौ की सत्तू को दही में मिलाकर करम्भ तैयार किया जाता है।

नशीले पेय पदार्थों में सोम और सुरा प्रचलित थे। सोम यज्ञों के अवसर पर पिए जाने वाला नशीला पदार्थ था। ऋग्वेद के नवें मण्डल में इसकी विस्तार में चर्चा हुई है। सोम का पौधा पहाड़ों पर, विशेष रूप से मूजवंत पर्वत पर उत्पन्न होता था। सुरा साधारण अवसरों पर पिये जाने वाला मादक पदार्थ था।

गाय को ऋग्वेद में अघन्या कहा गया है इसलिये उसका मांस निषिद्ध था। किंतु बैल, भेंड बकरी का मांस खाया जाता था। यज्ञ के अवसर पर इसकी बलि दिये जाने पर पुरोहित भी इसका मांस खाते थे। घोड़े का मांस अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर खाया जाता था। नमक और मछली के प्रयोग संभवतः ऋग्वैदिक काल में नहीं होता था।

Scanned with CamScanner

ऋग्वैदिक आर्य भुने हुए दाने ही छरी सब्जियाँ तथा मांस खाते थे।

आर्यों के वस्त्र सूत, ऊन तथा मृगचर्म से बनाए जाते थे

भेड़ की ऊन का ही वस्त्र प्रायः प्रयुक्त होता था। गंधार प्रदेश की भेड़ प्रसिद्ध थी। वस्त्र तीन प्रकार के होते थे।

(1) कमर से नीचे पहने जाने वाला - नीवी

(2) कमर से ऊपर पहने जाने वाला - वासस

(3) चादर या ओढ़नी - अधिवासम्

लोग वस्त्रों को सीलने तथा काटने की कला जानते थे।

लोग आभूषणों के साथ पगड़ी भी धारण करते थे। ऋग्वेद में नाई को वप्ता कहा गया है।

आर्यों के अभूषण निम्नांकित थे :-

कर्णशोभन - कान के आभूषण

कुरीर - सिर पर धारण करने वाला आभूषण

निष्कस्रंव मणि - गले का आभूषण

रुक्म – वन का आभूषण

ज्योचनी - संभवतः अंगूठी या इस प्रकार का कोई आभूषण

प्रवर्त – कान की बाली

क्षुर - उस्तरा

शिक्षा - इस समय शिक्षा मौखिक रूप से प्रदान की जाती थी। शिक्षा की चर्चा सातवें मंडल में है। विद्यार्थी के अर्थ में ब्रह्मचारिन का उल्लेख ऋग्वेद के दशम मंडल के एक सौ नवें सूक्त में मिलता है।

अध्ययन का प्रमुख विषय वेद था। इसके अतिरिक्त छन्द, शास्त्र, अनुष्ठान, गणित, ज्यामिति, ज्योतिष-भूगोल आदि अध्ययन के प्रमुख विषय थे। छान्दोग्य उपनिषद में अध्ययन के विषयों की सूची दी गई है।

मनोरंजन :–

संगीत मनोरंजन का प्रमुख साधन था। ऋग्वेद के मण्डूक सूक्त में सोमरस निकालने में जुटे ब्राह्मणों में संगीत

Scanned with CamScanner

पूर्ण पाठ का उल्लेख है। इस समय कण्ठ संगीत के साथ वाद्य संगीत का भी प्रचलन था। ऋग्वेद में तालवाद्य में ढोल, तारवाद्य में कर्करि, सुसिर वाद्य में बाँसुरी का उल्लेख है।

नृत्य भी मनोरंजन का प्रमुख साधन था। ऋग्वेद में उषा का एक नर्तकी के रूप में बहुत ही काव्यात्मक वर्णन है। पुरुष नर्तक को नृत्य तथा स्त्री नर्तक को नृत्तृ कहा जाता था। ऋग्वैदिक आर्य जीवन के उल्लास के गीत गाते थे एवं मृत्यु की चर्चा शत्रुओं के अतिरिक्त अन्य किसी परिप्रेक्ष्य में नहीं करते थे।

आमोद-प्रमोद के साधनों में द्यूत क्रीड़ा का भी महत्वपूर्ण स्थान था। इसके अतिरिक्त रथ, दौड़, शिकार, जुआ, शिकार खेलना आदि भी मनोरंजन के साधन थे। ऋग्वैदिक आर्यों के घर लकड़ी, बाँस, तथा मिट्टी

से निर्मित होते थे।

शिकार (मृगया) राजन्य वर्ग का मनोरंजन के साधन थी।

ऋग्वैदिक के संवाद सूक्त में नाटक की उत्पत्ति पर प्रकाश

पड़ता है। वाजसनेयी संहिता में शैलूष की चर्चा अभिनेता

के संदर्भ में है। इसी संहिता में वंशनर्तिन का तात्पर्य कलाबाज से है।

ऋग्वैदिक धर्म

ऋग्वैदिक धर्म की सर्वप्रथम विशेषता है, इसका व्यवहारिक

एवं उपयोगितावादी स्वरूप

वैदिक धर्म पूर्णत: प्रवृत्तिमार्गी है।

ऋषि विश्व को अमंगल कष्ट का स्थान नही मानते और

शरीर त्यागने की बात नही करते

वैदिक देवताओं में पुरुष भाव की प्रधानता है।

यद्यपि अधिकांश देवताओं की अराधना मानव रूप में की

जाती है तथापि कुछ देवताओं की अराधना पशु रूप में भी

की गई है। अज-एक पाद और अहिर्बुधन्य है।

Scanned with CamScanner